श्री शांतिनाथ विधान

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री शांतिनाथ विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्रीविद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023
संयोजक	:	बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना
संस्करण	:	तृतीय, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	30/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	१. बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना Mob.- 9425128817 २. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846 ३. अरिहंत जैन सागर, 8236060889
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥

अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ 1॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ 2॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ 3॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ 4॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ 5॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ 6॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ 7॥

हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी॥8॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥9॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(अवतार/लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।

ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य (आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥

जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री शांतिनाथ विधान

जय बोलिये

शांति के दाता,
शांति के प्रदाता,
शांति के विधाता,
शांति के विख्याता,
शांति के जिनालय,
शांति के समुन्दर,
शांति के सिद्धालय,
शांति के परमहंस,
शांति के सुखालय,
परमपूज्य
श्री शांतिनाथ भगवान् की जय॥

भजन

शांतिप्रभु मेरे जीवन की नाँव।
हे प्रभु! नैया पार लगा दो[2], दो चरणों की छाँव।

टूटी फूटी मेरी नैया, तुम बिन कौन खिवैया।
भोग व्यसन के तूफानों में, कोई नहीं बचैया॥
अब तो मुझको दे दो सहारा[2] दुखने लागे पाँव।
शांतिप्रभु मेरे जीवन...॥ 1॥

मिथ्या की आँधी से यह नैया, उल्टी दिशा में जाए।
विषय-कषायों की भँवरों में, डोले व टकराए॥
प्रभु! नाजुक पतवार सँभालो[2], दे दो किनारा गाँव।
शांतिप्रभु मेरे जीवन...॥ 2॥

बुरे-विचारों की लहरों ने, नैया की कमजोर।
राग-द्वेष वाले ज्वार-भाटों का, चंदा करता शोर॥
आसक्ति के खारे जल में[2], मेरा बचा लो बहाव।
शांतिप्रभु मेरे जीवन...॥ 3॥

भूत पिशाचों के मच्छों ने, नैया की बेहाल।
लेकिन नाम तुम्हारा जप के, होती मालामाल॥
अन्तर बाहर भर दो शांति[2], दो निज रूप स्वभाव।
शांतिप्रभु मेरे जीवन...॥ 4॥

सारी दुनियाँ शांति खोजे, राजा रंक फकीर।
जिसको भी तुम मिलते उसकी, सजती है तकदीर॥
'सुव्रत' के मन मन्दिर में आओ[2], ढलने लगी अब साँझ।

श्री शांतिनाथ विधान

स्थापना (दोहा)

शांतिप्रभु के पद-कमल, भक्त हृदय के प्राण।
द्रव्य भाव से भक्ति कर, हम तो करें प्रणाम॥

(मालती या लोलतरंग जैसा)

जब-जब याद तुम्हारी आयी, तब-तब मन्दिर को हम दौड़े।
जब-जब मन्दिर को हम दौड़े, तब-तब दर्शन कर, कर जोड़े॥
जब-जब दर्शन कर, कर जोड़े, तब-तब पूजन पाठ रचाई।
जब-जब पूजन-पाठ रचाई, तब-तब याद विधान की आई॥
जब-जब याद विधान की आई,तब-तब शांति विधान रचाये।
जब-जब शांति विधान रचाये, तब-तब संकट दुख घबराये॥
जब-जब संकट दुख घबराये, तब-तब निज की शांति पायी।
जब-जब निज की शांति पायी, तब-तब याद तुम्हारी आयी॥
शांति-प्रभु हमको मिले, जिनकी हमें तलाश।
आओ! आओ! मन वसो, करिए नहीं उदास॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पुष्पांजलिं....)

जब-जब शांति प्रभु को भूले, तब-तब मिथ्या फलते फूले।
जब-जब मिथ्या फलते फूले, तब-तब जन्म मरण हम झेले॥
जैसे ही शांति को याद किया तो, निर्मल आतम सी झलकी है।
जिनको सादर करके नमोस्तु, चरणों में धारा दी जल की है॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं.....।

जब-जब शांति का नाम लिया ना, तब-तब खूब उपद्रव होते।
जब-जब खूब उपद्रव होते, तब-तब चेतन के दिल रोते॥

जैसे ही शांति का नाम पुकारा, ज्वाला शीतल हुई चेतन की।
जिनको सादर करके नमोस्तु, चरणों में धारा दी चंदन की॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं.....।

जब-जब शांति की माला न फेरी, तब-तब मन बंदर सा फिरता।
जब-जब मन बन्दर सा फिरता, तब-तब रूप दिगम्बर न रुचता॥
जैसे ही शांति की माला फेरी, मोक्ष महल सा निज में पाये।
जिनको सादर करके नमोस्तु, चरणों में अक्षत पुञ्ज चढ़ाये॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.....।

जब-जब शांति का दर्शन न पाया, तब-तब निज की कली मुरझाई।
जब-जब निज की कली मुरझाई, तब-तब आतम खिलने न पाई॥
जैसे ही शांति का दर्शन पाया, दोष नशे हुई ब्रह्म गुलाला।
जिनको सादर करके नमोस्तु, चरणों में अर्पित पुष्पों की माला॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....।

जब-जब ध्याया न शांतिप्रभु को, तब-तब जीवन नीरस जैसा।
जब-जब जीवन नीरस जैसा, तब-तब आतम भूखा प्यासा॥
जैसे ही शांति का ध्यान लगाया, निज में निज का रस-सा आया।
जिनको सादर करके नमोस्तु, चरणों में ये नैवेद्य चढ़ाया॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।

जब-जब शांति की आरती न की,तब-तब जीवन में छाया अँधेरा।
जब-जब जीवन में छाया अँधेरा,तब-तब राही का बढ़ता है फेरा॥
जैसे ही शांति की ज्योति मिली तो, ज्ञान का सूर्य प्रकाशित पाया।
जिनको सादर करके नमोस्तु, चरणों में आकर दीप जलाया॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं.....।

जब-जब शांति का पाठ किया ना, तब-तब कर्मों की बढ़ती कहानी।
जब-जब कर्मों की बढ़ती कहानी, तब-तब निज की विभूति विरानी॥
जैसे ही शांति का पाठ रचाया, कर्मों की कड़ियाँ चट-चट चटकीं।
जिनको सादर करके नमोस्तु, चरणों में खेयें धूप धूप-घट की॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

जब-जब न पूजा शांतिप्रभु को, तब-तब दुनियाँ हमसे रूठी।
जब-जब दुनियाँ हमसे रूठी, तब-तब जीने की आशा छूटी॥
जैसे ही शांतिप्रभु को पूजा, आतम में परमातम सा पाये।
जिनको सादर करके नमोस्तु, चरणों में फल के गुच्छे चढ़ाये॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।

जब-जब शांति विधान किया ना, तब-तब है हर क्रिया अधूरी।
जब-जब है हर क्रिया अधूरी,तब-तब न कम हो आपस की दूरी॥
जैसे ही शांति विधान रचाये, अंदर से मुक्ति का पाया इशारा।
जिनको सादर करके नमोस्तु, चरणों में अर्पित अर्घ्य हमारा॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(लय : गिल्ली डंडा खेल.....)

नमो-नमो जप रहो थो, माँ ऐरा तेरो लाडलो[2]
एक बार देखो हमने ऐरा माँ के पुण्य में[2]
चुपके-चुपके सो रहो थो, माँ ऐरा .... नमो....
एक बार देखो हमने, हस्तिनापुर तीर्थ में[2]
रत्न-वर्षा पाए रहो थो, माँ ऐरा .... नमो....
एक बार देखो हमने सारे संसार में[2]
गर्भ कल्याणक छाए रहो थो, माँ ऐरा .... नमो....

(दोहा)

कृष्ण सप्तमी भाद्र को, तजकर स्वर्ग विमान।
ऐरा माँ के गर्भ में, वसे शांति भगवान्॥

ॐ ह्रीं भाद्रकृष्णसप्तम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(लय : बाजे कुण्डलपुर....)

बाजे हस्तिनापुर में बधाई, कि नगरी में शांति जन्मे...शांतिनाथ जी
शुभ मंगल बेला आई, त्रिलोक में आनन्द छाया... शांतिनाथ जी

सौधर्म शचि सह आये, कि अभिषेक मेरु पे करें... शांतिनाथ जी
नृप विश्वसेन हर्षाये, कि जन्म कल्याणक है... शांतिनाथ जी
चौदह कृष्णा ज्येष्ठ को, जन्मे शांति विराट।
विश्वसेन के आँगने, ज्ञान-बताशा बाँट॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(लय : अय मेरे प्यारे वतन...)

अय! हमारी आतमा, अय! परम परमात्मा- झूठी दुनियाँ त्याग, धार ले वैराग्य

जन्म मृत्यु कर्म सुख दुख, कर अकेले ही सहन।
पुत्र पत्नि मित्र बन्धु, स्वार्थ में सब हैं मगन॥

मोह मिथ्या नींद से अब, जाग चेतन जाग। धार ले वैराग्य।

जन्म-तिथी में तप धरे, तजे अशांति शोर।
शांतिनाथ मुनि को हुई, नमोस्तु चारों ओर॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(लोलतरंग)

जब तक है अज्ञान अँधेरा, तब तक ज्ञान की ज्येति मिले ना।
जब तक ज्ञान की ज्योति मिले ना,तब तक मोह का अंध टले ना॥
जैसे ही मोह का अंध नशाये, केवलज्ञानी हों अर्हन्ता।
तत्त्व प्रकाशी निज रस स्वादी, जय-जय शांतिनाथ जिनन्दा॥
दशमी शुक्ला पौष में, पाया केवलराज।
नमन शांति अर्हन्त को, करती भक्त समाज॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लदशम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जब तक है अर्हंत अवस्था, तब तक कर्म न पूर्ण नशेंगे।
जब तक कर्म न पूर्ण नशेंगे, तब तक शुद्ध न सिद्ध बनेंगे॥
कर्म नशें ज्यों मोक्ष मिले त्यों, सिद्ध बने गुण पाए अनन्ता।
काल अनन्ता, ब्रह्म रमन्ता, जय-जय, जय-जय सिद्ध महन्ता॥
चौदस कृष्णा ज्येष्ठ को, मोक्ष गए शान्तीश।
कुन्दप्रभ कूट शाश्वतगिरि, को वंदन नत शीश॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जयमाला

विघ्न हरण मंगलकरण, शांतिनाथ भगवान्।
जिनकी पूजन से मिले, वीतराग विज्ञान॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! शांति प्रभो की, जय-जय अतिशयकारी की।
जय हो! जय हो! दया सिन्धु की, जय-जय मंगलकारी की॥
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, महिमा खूब तुम्हारी है।
सबके दिल पर छाये रहते, अजब-गजब बलिहारी है॥ 1॥
पिछले भव में रहे मेघरथ, राज-पाठ जिनने छोड़ा।
मुनि बन तीर्थंकर प्रकृति का, नाम कर्म बंधन जोड़ा॥
फिर प्रायोपगमन धारण कर, कर संन्यासमरण उत्तम।
काया तज अहमिन्द्र बने फिर, हस्तिनागपुर लिया जनम॥ 2॥

विश्वसेन नृप ऐरा रानी, तुमको पाकर धन्य हुए।
गर्भ जन्म कल्याणक करके, सारे भक्त प्रसन्न हुए॥
शंख सिंह भेरी घण्टा से, जन्म सूचना पाकर के।
चार निकायों के देवों ने, पर्व मनाया आकर के॥ 3॥

गर्भ-भवन में शचि-इन्द्राणी, जाकर के माँ बालक को।
सुला दिया माया-निद्रा से, उठा लिया जिन-बालक को॥
सौंप दिया सौधर्म इन्द्र को, इन्द्र चले ऐरावत से।
सुमेरु पर जन्माभिषेक कर, नाम शांतिनाथ रक्खे॥ 4॥

चक्र शंख सूरज चंदादिक, चिह्न सुनहरे थे तन में।
होकर कामदेव बारहवें, किन्तु रहे निज चेतन में॥
कुमारकाल बीत जाने पर, विश्वसेन निज राज्य दिए।
चौदह रत्न और नौ निधियाँ, प्रकट हुए जो भोग लिए॥ 5॥

शांति चक्रवर्ती ने इक दिन, दर्पण में दो मुख देखे।
आत्मज्ञान वैराग्य हुआ तो, क्षण भंगुर वैभव फैंके॥

ज्यों घर तजने का सोचे तो, लौकान्तिक अनुमोदन पा।
राज्य दिया नारायण सुत को, फिर दीक्षा अभिषेक हुआ॥ 6॥

तब सर्वार्थसिद्धि पालकी, से गृह तजने यतन किए।
सहस्र आम्रवन में दीक्षा ले, पंचमुष्ठि केशलौंच किए॥
शांतिनाथ जब बने दिगम्बर, धरती अम्बर गूँज पड़े।
ज्ञान मनःपर्यय प्रकटा तो, भक्ति पुण्य सब लूट चले॥ 7॥

मन्दिरपुर में सुमित्र राजा, दीक्षा का आहार दिए।
पंचाश्चर्य पुण्य पाया तो, सब ने जय-जयकार किए॥
सोलह वय छद्मस्थ बिता के, बने केवली शान्तीश्वर।
समवसरण फिर हुआ सुशोभित, थे छत्तीस पूज्य गणधर॥ 8॥

मासिक योग निरोध धारकर, श्रीसम्मेदशिखर पर जा।
शुक्लध्यान से कर्म नशाकर, सिद्ध मोक्ष में बने अहा॥
जो श्रीषेण हुए राजा फिर, भोगभूमि में आर्य हुए।
देव हुए फिर विद्याधर जो, देव हुए बलभद्र हुए॥ 9॥

देव हुए, वज्रायुध चक्री, फिर अहमिन्द्र मेघरथ बन।
मुनि सर्वार्थसिद्धि पहुँचे फिर, तीर्थंकर शांति भगवन्॥
ऐसे शांतिनाथ भगवन् के, बारह-बारह भव सुन्दर।
शांतिनाथ सा अन्य कौन जो, धर्म धुरंधर तीर्थंकर॥ 10॥

कामदेव ने जन्म धारकर, जीती सब सुन्दरताएँ।
शांतिनाथ ने चक्री बनकर, जय की सभी सम्पदाएँ॥
तीर्थंकर बन शांतिनाथ ने, पाया मोक्ष कर्म कर क्षय।
कामदेव चक्री तीर्थंकर, शांतिप्रभु की बोलो जय॥11॥

कालचक्र वश लुप्त धर्म को, वृषभ आदि प्रभु दिखलाये।
फिर भी प्रसिद्ध अवधि अंत तक, बोलो कौन चला पाये?

किन्तु बाद में शांतिप्रभु से, मोक्षमार्ग जो प्रकट हुआ।
अपनी निश्चित अवधिकाल तक, बिन बाधा के प्राप्त हुआ॥ 12॥

ऐसे शांतिनाथ भगवन् का, ध्यान निरन्तर धारो तो।
होगा भला शांति भी होगी, बुध ग्रह में मत बाँधो तो॥
आज आद्य गुरु शांतिनाथ का, चमत्कार कुछ अलग दिखे।
खण्ड-खण्ड सौभाग्य पिण्ड भी, 'सुव्रत' पुण्य अखण्ड दिखे॥ 13॥

(सोरठा)

हिरण चिह्न पहचान, शांतिनाथ प्रभु नाम है।
त्रयपद मय भगवान्, बारम्बार प्रणाम है॥
पुण्य खरीदा आज, भक्ति मूल्य का दाम दें।
शांतिनाथ जिनराज, स्वर्ग मोक्ष सुख धाम दें॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

शांतिनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, शांतिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

प्रथम अर्घ्यावली

(जोगीरासा) (अष्टकर्म वर्णन)

ज्ञानावरणी कर्म प्रकृतियाँ, पाँच तरह की होतीं।
जो ढँकले सर्वज्ञ ज्ञान गुण, आतम जिससे रोतीं॥
परम दयालु शांतिप्रभु सम, ज्ञानावरण नशायें।
अर्घ चढ़ा के भक्त आपको, सादर शीश झुकायें॥ 1॥

ॐ ह्रीं अज्ञान बुद्धिकर्मोपद्रव विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

दर्शनावरणी कर्म प्रकृतियाँ, नव प्रकार की होतीं।
ढँके निराकुल दर्शन गुण जो, आतम जिससे रोतीं॥

परम दयालु शांतिप्रभु सम, दर्शनावरण नशायें।
अर्घ चढ़ा के भक्त आपको, सादर शीश झुकायें॥ 2॥

ॐ ह्रीं दर्शनदृष्टिकर्मोपद्रव विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

वेदनीय की वेदन प्रकृतियाँ, दो प्रकार की होतीं।
अव्याबाध हरे सुख-दुख दे, आतम जिससे रोतीं॥
परम दयालु शांतिप्रभु सम, वेदन-कर्म नशायें।
अर्घ चढ़ा के भक्त आपको, सादर शीश झुकायें॥ 3॥

ॐ ह्रीं सुख-दुःखकर्मोपद्रव विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

मोहनीय की मादक प्रकृतियाँ, आठ-बीस विध होतीं।
जो ढँक ले रत्नत्रय प्यारा, आतम जिससे रोतीं॥
परम दयालु शांतिप्रभु सम, मोही कर्म नशायें।
अर्घ चढ़ा के भक्त आपको, सादर शीश झुकायें॥ 4॥

ॐ ह्रीं श्रद्धाचारित्रविरोधीकर्मोपद्रव विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

आयु कर्म जंजीर प्रकृतियाँ, चार तरह की होतीं।
बाँधे ढाँके अवगाहन गुण, आतम जिससे रोतीं॥
परम दयालु शांतिप्रभु सम, आयु कर्म नशायें।
अर्घ चढ़ा के भक्त आपको, सादर शीश झुकायें॥ 5॥

ॐ ह्रीं बंधक-बंधन कर्मोपद्रव विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

नाम कर्म बहु रंग प्रकृतियाँ, जो तिरानवे होतीं।
हरे सूक्ष्म गुण बाधक बनतीं, आतम जिससे रोतीं॥
परम दयालु शांतिप्रभु सम, नामी-कर्म नशायें।
अर्घ चढ़ा के भक्त आपको, सादर शीश झुकायें॥ 6॥

ॐ ह्रीं बाधकसाधनतत्त्वकर्मोपद्रव विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

गोत्रकर्म की गजब प्रकृतियाँ, दो प्रकार की होतीं।
हरे अगुरुलघु ऊँच-नीच दे, आतम जिससे रोतीं॥

परम दयालु शांतिप्रभु सम, गोत्री कर्म नशायें।
अर्घ चढ़ा के भक्त आपको, सादर शीश झुकायें॥ 7॥

ॐ ह्रीं ऊँचनीचहेतु कर्मोपद्रव विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अंतराय की चतुर प्रकृतियाँ, पाँच तरह की होतीं।
हरें वीर्यगुण कार्य बिगाड़ें, आतम जिससे रोतीं॥
परम दयालु शांतिप्रभु सम, सब अंतराय नशायें।
अर्घ चढ़ा के भक्त आपको, सादर शीश झुकायें॥ 8॥

ॐ ह्रीं विरोधी अराजकतत्त्वकर्मोपद्रव विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्यं

एक सौ अड़तालीस कर्म प्रकृतियाँ, आठ कर्म की होतीं।
चिदानन्द चैतन्य शांतिहर, आतम जिससे रोतीं॥
परम दयालु शांति प्रभु सम, विधि अपराध नशायें।
अर्घ चढ़ा के भक्त आपको, सादर शीश झुकायें॥ 9॥

ॐ ह्रीं दण्ड-अपराधदोषकर्मोपद्रव विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं....।

द्वितीय अर्घ्यावली

(श्रावक का सोला वर्णन)

आटे दाल आदि मर्यादित, प्रासुक शुद्ध रहे जो।
अन्न शुद्धि वह कहे शांतिप्रभु, चारित शुद्ध करे जो॥
द्रव्य शुद्धि से आत्म शुद्धि को, सोला कहते सोला।
जैनधर्म का बच्चा बोला, शांतिप्रभु अनमोला॥ 1॥

ॐ ह्रीं अन्नापद विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जीवाणी लायक मर्यादित, प्रासुक नीर रहे जो।
नीर शुद्धि वह कहे शांतिप्रभु, चारित शुद्ध करे जो॥
द्रव्य शुद्धि से आत्म शुद्धि को, सोला कहते सोला।
जैनधर्म का बच्चा बोला, शांतिप्रभु अनमोला॥ 2॥

ॐ ह्रीं जलापदविनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जल आहार पकाने लायक, प्रासुक अग्नि रहे जो।
अग्नि शुद्धि वह कहे शांतिप्रभु, चारित शुद्ध करे जो॥
द्रव्य शुद्धि से आत्म शुद्धि को, सोला कहते सोला।
जैनधर्म का बच्चा बोला, शांतिप्रभु अनमोला॥ 3॥

ॐ ह्रीं अग्न्यापद-विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

आगम विधि से तन वस्त्रों की, दाता शुद्धि रखे जो।
कर्त्ता शुद्धि वह कहे शांतिप्रभु, चारित शुद्ध करे जो॥
द्रव्य शुद्धि से आत्म शुद्धि को, सोला कहते सोला।
जैनधर्म का बच्चा बोला, शांतिप्रभु अनमोला॥ 4॥

ॐ ह्रीं कर्त्तापद-विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सूर्य प्रकाश वहाँ आता हो, दाता-पात्र जहाँ हो।
प्रकाश शुद्धि वह कहे शांतिप्रभु, चारित शुद्ध करे जो॥
क्षेत्र शुद्धि से आत्म शुद्धि को, सोला कहते सोला।
जैनधर्म का बच्चा बोला, शांतिप्रभु अनमोला॥ 5॥

ॐ ह्रीं प्रकाशापद विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

शुद्ध वायु प्राकृतिक वहाँ हो, दाता-पात्र जहाँ हो।
वायु शुद्धि वह कहे शांतिप्रभु, चारित शुद्ध करे जो॥
क्षेत्र शुद्धि से आत्म शुद्धि को, सोला कहते सोला।
जैनधर्म का बच्चा बोला, शांतिप्रभु अनमोला॥ 6॥

ॐ ह्रीं वायु-आपद विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

आवागमन वहाँ न होवे, दाता-पात्र जहाँ हो।
गमन शुद्धि वह कहे शांतिप्रभु, चारित शुद्ध करे जो॥
क्षेत्र शुद्धि से आत्म शुद्धि को, सोला कहते सोला।
जैनधर्म का बच्चा बोला, शांतिप्रभु अनमोला॥ 7॥

ॐ ह्रीं आवागमनापद विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

हिंसा मैल गंदगी ना हो, दाता-पात्र जहाँ हो।
हिंसा शुद्धि वह कहे शांतिप्रभु, चारित शुद्ध करे जो॥

क्षेत्र शुद्धि से आत्म शुद्धि को, सोला कहते सोला।
जैनधर्म का बच्चा बोला, शांतिप्रभु अनमोला॥ 8॥

ॐ ह्रीं हिंसापद विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

रात न हो जब पात्र-दान दो, या आहार बना हो।
रात्रि शुद्धि वह कहे शांतिप्रभु, चारित शुद्ध करे जो॥
काल शुद्धि से आत्म शुद्धि को, सोला कहते सोला।
जैनधर्म का बच्चा बोला, शांतिप्रभु अनमोला॥ 9॥

ॐ ह्रीं रात्रि-आपद विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ग्रहण न हो जब पात्र दान दो, या आहार बना हो।
ग्रहण शुद्धि वह कहे शांतिप्रभु,चारित शुद्ध करे जो॥
काल शुद्धि से आत्म शुद्धि को, सोला कहते सोला।
जैनधर्म का बच्चा बोला, शांतिप्रभु अनमोला॥ 10॥

ॐ ह्रीं ग्रहणापद विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

शोक न हो जब पात्र दान दो, या आहार बना हो।
शोक शुद्धि वह कहे शांतिप्रभु, चारित शुद्ध करे जो॥
काल शुद्धि से आत्म शुद्धि को, सोला कहते सोला।
जैनधर्म का बच्चा बोला, शांतिप्रभु अनमोला॥ 11॥

ॐ ह्रीं शोकापद विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

शोर न हो जब पात्र दान दो, या आहार बना हो।
शोर शुद्धि वह कहे शांतिप्रभु, चारित शुद्ध करे जो॥
काल शुद्धि से आत्म शुद्धि को, सोला कहते सोला।
जैनधर्म का बच्चा बोला, शांतिप्रभु अनमोला॥ 12॥

ॐ ह्रीं जन्म शोर विकृति आपद विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

स्नेह रखो जब पात्र दान दो, या आहार बना हो।
स्नेह शुद्धि वह कहे शांतिप्रभु, चारित शुद्ध करे जो॥
भाव शुद्धि से आत्म शुद्धि को, सोला कहते सोला।
जैनधर्म का बच्चा बोला, शांतिप्रभु अनमोला॥ 13॥

ॐ ह्रीं स्नेहापद विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

दया रखो जब पात्र दान दो, या आहार बना हो।
दया शुद्धि वह कहे शांतिप्रभु, चारित शुद्ध करे जो॥
भाव शुद्धि से आत्म शुद्धि को, सोला कहते सोला।
जैनधर्म का बच्चा बोला, शांतिप्रभु अनमोला॥ 14॥

ॐ ह्रीं दया आपद विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

विनय रखो जब पात्र दान दो, या आहार बना हो।
विनय शुद्धि वह कहे शांतिप्रभु, चारित शुद्ध करे जो॥
भाव शुद्धि से आत्म शुद्धि को, सोला कहते सोला।
जैनधर्म का बच्चा बोला, शांति-प्रभु अनमोला॥ 15॥

ॐ ह्रीं विनयापद विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

धर्म समझ कर पात्र दान दो, या आहार बना हो।
दान शुद्धि वह कहे शांतिप्रभु, चारित शुद्ध करे जो॥
भाव शुद्धि से आत्म शुद्धि को, सोला कहते सोला।
जैनधर्म का बच्चा बोला, शांतिप्रभु अनमोला॥ 16॥

ॐ ह्रीं धर्मापद विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्यं

त्रय पदधारी शांतिप्रभु ने, पहले धारा सोला।
फिर चौबीसी में आया है, जिनका शुभक्रम सोला॥

सोला के सोला योगों से, टलें उपद्रव सारे।
शांतिप्रभु के पद पंकज में, अब तो शीश झुका रे॥

ॐ ह्रीं समस्तविध-आपद-विनाशनसमर्थ-श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

तृतीय अर्घ्यावली

(विष्णु)

भोजन में मल मूत्र देह पर, गिरे पक्षियों का।
काक नाम का विघ्न वही जो, हरे शांति झौंका॥

शांतिप्रभु करुणा बरसा के, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोस्तु स्वामी! आप कृपा कर दो॥ 1॥

ॐ ह्रीं पक्षी आदिघोरोपद्रव विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पाणि-पात्र से ग्रास कोई भी, पक्षी ले दौड़ें।
काकादिक उस पिण्ड हरण से, झट भोजन छोड़ें॥
शांतिप्रभु शुद्धात्म धार से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोस्तु स्वामी! आप कृपा कर दो॥ 2॥

ॐ ह्रीं शत्रुपतन पातनादिघोरो पद्रवविनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

भोजन में जब हुआ वमन तो, भोजन करना क्या।
वमन नाम का विघ्न वही है, उससे डरना क्या?
शांतिप्रभु ज्ञानामृत दे के, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोस्तु स्वामी! आप कृपा कर दो॥ 3॥

ॐ ह्रीं वमन दिनाई आदि घोरो पद्रव विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चर्या में चारांगुल से जब, ज्यादा रुधिर दिखे।
रुधिर नाम का विघ्न समझकर, क्या आहार रुचे
शांतिप्रभु अध्यात्म नीर से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोस्तु स्वामी! आप कृपा कर दो॥ 4॥

ॐ ह्रीं रक्त विकाररक्तस्रावादिघोरो पद्रव विनाशनसमर्थ-श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

भोज्य काल, में अपना पर का, रोना धोना क्यों।
अश्रुपात वह विघ्न समझकर, खाना-पीना क्यों?
शांतिप्रभु निज आत्म क्षमा से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोस्तु स्वामी! आप कृपा कर दो॥ 5॥

ॐ ह्रीं नेत्रविकार अश्रु अतिवृष्टि अनावृष्टि ओलावृष्टि असमयवृष्टि बाढ़ जलादि घोरोपद्रव विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

मृत्यु शोक का समाचार जब, कोई जन सुनता।
मरण नाम का विघ्न समझकर, क्या भोजन रुचता॥

शांतिप्रभु अपनत्व भाव से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोस्तु स्वामी! आप कृपा कर दो॥ 6॥

ॐ ह्रीं हत्या आत्महत्या भ्रूणहत्यादिघोरोपद्रव विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

वाद विवाद कलह के पल में, जो आहार हुआ।
कलह नाम का विघ्न समझकर, देह विकार हुआ॥
शांतिप्रभु वात्सल्य भाव से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोस्तु स्वामी! आप कृपा कर दो॥ 7॥

ॐ ह्रीं वादविवादकलहसंघर्षादिघोरोपद्रव विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

भोज्य काल में पञ्चेन्द्री का, हुआ माँस दर्शन।
माँस दर्श वह विघ्न समझकर, कौन करे भोजन॥
शांतिप्रभु कारुण्य भाव से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोस्तु स्वामी! आप कृपा कर दो॥ 8॥

ॐ ह्रीं माँसाहारनिमित्तादिघोरोपद्रव विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

यदि आहार समय में कोई, प्राणी वध होता।
उसे जन्तु वध विघ्न जानकर, क्या भोजन होता॥
शांतिप्रभु अपने आश्रय से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोस्तु स्वामी! आप कृपा कर दो॥ 9॥

ॐ ह्रीं प्राणी वध बंधन चीत्कार गौहत्यादिघोरोपद्रव विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

भरी अंजली से भोजन का, कुछ भी पिण्ड गिरे।
पिण्ड पतन वह विघ्न जानकर, भोजन छोड़ो रे॥
शांतिप्रभु कल्याण भाव से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोस्तु स्वामी! आप कृपा कर दो॥ 10॥

ॐ ह्रीं असहनीयकर्मकष्टघोरोपद्रव विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

भोजन में पञ्चेन्द्री प्राणी, पैर-बीच निकलें।
उस पादांतर जीव विघ्न में, कभी न भोजन लें॥
शांतिप्रभु जग मंगल करके, सभी विघ्न हर लो।

हम तो करें नमोस्तु स्वामी! आप कृपा कर दो॥ 11॥

ॐ ह्रीं हिंस्रपशुसिंह सर्पादिघोरोपद्रव विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

देव आदि आहार समय में, जो उपसर्ग करें।
उस देवाद्युपसर्ग विघ्न में, क्या आहार करें?॥
शांतिप्रभु साहस धीरज दे, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोस्तु स्वामी! आप कृपा कर दो॥ 12॥

ॐ ह्रीं बाह्यबाधाभूतप्रेतपिशाचादिघोरोपद्रव विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अगर भरे या खाली बर्तन, भोज्य-काल गिरते।
उस भाजन संपात विघ्न से, मुनि भोजन तजते॥
शांतिप्रभु निज ब्रह्मरमण से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोस्तु स्वामी! आप कृपा कर दो॥ 13॥

ॐ ह्रीं बाह्यपरिग्रह भाजनादिघोरोपद्रव विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.।

यदि आहार काल में मल का, हुआ विसर्जन तो।
उस उच्चार विघ्न में धर्मी, छोड़ें भोजन को॥
शांतिप्रभु शुचि रत्नत्रय से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोस्तु स्वामी! आप कृपा कर दो॥ 14॥

ॐ ह्रीं मल अवरोध अतिसारसंग्रहणी पेचिस भगंदरबाधादिघोरोपद्रव विनाशनसमर्थ-श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

शुक्र वीर्य या मूत्र पतन यदि, हो आहारों में।
उसे प्रस्रवण विघ्न समझ के, फँस न विकारों में॥
शांतिप्रभु निज आत्मशक्ति से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोस्तु स्वामी! आप कृपा कर दो॥ 15॥

ॐ ह्रीं मूत्र वीर्य विकारादिघोरोपद्रव विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

अगर उदर से कृमी निकलते, भोजन की अवधि।
उदर-कृमी निर्गमन विघ्न में, खाद्य तजो जल्दी॥

शांतिप्रभु बन ज्ञाता दृष्टा, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोस्तु स्वामी! आप कृपा कर दो॥ 16॥

ॐ ह्रीं उदरविकार कृमि शूल पित्त ज्वर अपच्यादिघोरोपद्रव विनाशनसमर्थ-श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सूतक पातक वाले घर में, जो आहार हुआ।
वो अभोज्य गृह विघ्न उसी से, हा-हाकार हुआ॥
शांतिप्रभु निज ज्ञान ज्योति से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोस्तु स्वामी! आप कृपा कर दो॥ 17॥

ॐ ह्रीं शोर सूतक पातकादिघोरोपद्रव विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

जहाँ नाभि के नीचे सिर को, करके हो जाना।
नाभ्यधो निर्गमन विघ्न में, कुछ भी ना खाना॥
शांतिप्रभु परमार्थ भाव से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोस्तु स्वामी! आप कृपा कर दो॥ 18॥

ॐ ह्रीं कटिप्रदेशनाभि पदसन्धिविकार घोरोपद्रवविनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चर्या में यदि महाव्रती जन, कोई गिर जाएँ।
पतन नाम का विघ्न समझकर, कुछ न पिएँ खाएँ॥
शांतिप्रभु उपकार भाव से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोस्तु स्वामी! आप कृपा कर दो॥ 19॥

ॐ ह्रीं मूर्च्छा मिर्गी तनाव अवसादादि घोरोपद्रव विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सन्त अगर आहार समय में, गलती से बैठे।
उपवेशन वह विघ्न समझकर, खान पान छूटे॥
शांतिप्रभु समरसी भाव से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोस्तु स्वामी! आप कृपा कर दो॥ 20॥

ॐ ह्रीं पदस्थ आसनपदासक्ति आदिघोरोपद्रव विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कुत्ता बिल्ली यदि चर्या में, चौके में आते।
सदंश विघ्न से छोड़ अंजली, संत बैठ जाते॥
शांतिप्रभु वैराग्य भाव से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोस्तु स्वामी! आप कृपा कर दो॥ 21॥

ॐ ह्रीं श्वान मार्जार बर्र मक्छिका दंशादिघोरोपद्रव विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अशुद्ध नर-नारी यदि छूले, चर्या काल कभी।
शूद्र स्पर्श का विघ्न समझकर, तज आहार तभी॥
शांतिप्रभु निज भेद ज्ञान से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोस्तु स्वामी! आप कृपा कर दो॥ 22॥

ॐ ह्रीं दुष्टजन स्त्री नपुंसकादिकृत घोरोपद्रव विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अगर अंजली में आ जाए, त्यागी वस्तु तो।
सेवन प्रत्याख्यात् विघ्न से, भोजन तज तू तो॥
शांतिप्रभु निज परिणामों से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोस्तु स्वामी! आप कृपा कर दो॥ 23॥

ॐ ह्रीं अभक्ष्य अनुपसेव्य विकृत रस विषादिकृतघोरोपद्रवविनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

यदि आहार काल में कर से, भू का हो छूना।
भूमि स्पर्श का विघ्न समझकर, अंतराय करना॥
शांतिप्रभु निर्मोह भाव से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोस्तु स्वामी! आप कृपा कर दो॥ 24॥

ॐ ह्रीं भू पर्वत गगन नदि सिन्धु कृत घोरोपद्रवविनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

भोजन में यदि मुख से कफ-मल, थूक आदि निकले।
निष्ठीवन का विघ्न समझकर, भोजन को तज ले॥
शांतिप्रभु निर्मल भावों से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोस्तु स्वामी! आप कृपा कर दो॥ 25॥

ॐ ह्रीं कफथूकमुखविकारादि घोरोपद्रवविनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

चर्या में निज या अन्यों पर, हुए प्रहार कभी।
तो प्रहार का विघ्न समझकर, छोड़ें भोज्य तभी॥
शांतिप्रभु तत्त्वोपलब्धि से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोस्तु स्वामी! आप कृपा कर दो॥ 26॥

ॐ ह्रीं खड्ग चाकू अस्त्रशस्त्रादि घोरोपद्रव विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

घुटनों से नीचे यदि अपने, स्पर्श हाथ का हो।
विघ्न जान्वध परामर्श से, झट भोजन त्यागो॥
शांतिप्रभु प्रत्यक्ष भाव से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोस्तु स्वामी! आप कृपा कर दो॥ 27॥

ॐ ह्रीं स्पर्शरोगादिघोरोपद्रव विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

भोजन में यदि नाभि जाँघ के, नीचे हाथ हुए।
विघ्न जानु परि व्यतिक्रम से, भोजन त्याग हुए॥
शांतिप्रभु निज शुद्ध भाव से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोस्तु स्वामी! आप कृपा कर दो॥ 28॥

ॐ ह्रीं मर्यादा उल्लंघनादिघोरोपद्रव विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अगर अंजली में कोई भी, आकर जीव मरे।
पाणि जन्तु वध विघ्न समझकर, भोजन कौन करे॥
शांतिप्रभु निज समयसार से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोस्तु स्वामी! आप कृपा कर दो॥ 29॥

ॐ ह्रीं अरक्षा सुरक्षाभयादिघोरोपद्रव विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

हाथ पाँव से बिना दान दी, वस्तु ले लेना।
अदत्त-दत्त ग्रहण विघ्न से, भोजन तज देना॥
शांतिप्रभु निज चिदानन्द से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोस्तु स्वामी! आप कृपा कर दो॥ 30॥

ॐ ह्रीं लूटचोरी अपहरणादिघोरोपद्रव विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं....।

चर्या में यदि शहर नगर में, जब भी आग लगे।
ग्राम दाह का विघ्न समझकर, ज्ञानी भोज्य तजे॥
शांतिप्रभु चैतन्य भाव से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोस्तु स्वामी! आप कृपा कर दो॥ 31॥

ॐ ह्रीं भूकम्प ज्वालामुखी अग्निदाहादिघोरोपद्रव विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चर्या में यदि मल मूत्रों से, छपे पैर या तन।
तो अमेध्य वह विघ्न समझकर, शीघ्र तजें भोजन॥
शांतिप्रभु चिद्रूपभाव से, सभी विघ्न हर लो।
हम तो करें नमोस्तु स्वामी! आप कृपा कर दो॥ 32॥

ॐ ह्रीं मलमूत्र उपसर्गादिघोरोपद्रव विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य

कष्ट उपद्रव आपदाएँ तो, जब-जब भी आएँ।
किन्तु लक्ष्य से महापुरुष जन, डरें न घबराएँ॥
शांति जिनेश्वर का सुमरण कर, पाने ध्यान गुफा।
अर्घ चढ़ाएँ करें नमोस्तु, अपना शीश झुका॥

ॐ ह्रीं समस्तविधउपसर्गादिघोरोपद्रव विनाशनसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

चतुर्थ अर्घ्यावली

(बसन्ततिलका)

जो कामदेव फिर चक्र धरे, जिनेशा।
प्राणी त्रिधा चरण याद करें हमेशा॥
है नाम मात्र जिनका दुख विघ्नहारी।
हे! शांतिनाथ भगवन्, जय हो तुम्हारी॥ 1॥

ॐ ह्रीं कामदेव चक्री तीर्थंकर त्रयपदधारी अतिशयकारी वातपित्तकफादि देह विकार निवारणसमर्थ श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(सोलहकारण भावना)

(चौपाई)

निर्मल सम्यग्दर्शन चित धर, बने शांतिप्रभु त्रय पद धर कर।
दरश विशुद्धि धरें हम स्वामी, अतः शांतिप्रभु को प्रणमामि॥ 2॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनाभूषिततीर्थंकर पदलाभाय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

धर्म और धर्मी को झुक कर, बने शांतिप्रभु त्रय पद धर कर।
विनय सम्पन्न बनें हम स्वामी, अतः शांतिप्रभु को प्रणमामि॥ 3॥

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनाभूषिततीर्थंकर पदलाभाय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

दोष रहित व्रत शील धार कर, बने शांतिप्रभु त्रय पद धर कर।
कठिन शील धारें हम स्वामी, अतः शांतिप्रभु को प्रणमामि॥ 4॥

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनाभूषिततीर्थंकर पदलाभाय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।

ज्ञान धार में सदा तैर कर, बने शांतिप्रभु त्रय पद धर कर।
सदा ज्ञान रत हों हम स्वामी, अतः शांतिप्रभु को प्रणमामि॥ 5॥

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनाभूषिततीर्थंकर पदलाभाय श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

भव-तन भोग विराग धार कर, बने शांतिप्रभु त्रय पद धर कर।
नित संवेग धरें हम स्वामी, अतः शांतिप्रभु को प्रणमामि॥ 6॥

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णसंवेगभावनाभूषिततीर्थंकर पदलाभाय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.।

त्याग किया निज शक्ति याद कर, बने शांतिप्रभु त्रय पद धर कर।
त्याग करें हम बल से स्वामी, अतः शांतिप्रभु को प्रणमामि॥ 7॥

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागभावनाभूषिततीर्थंकर पदलाभाय श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

इच्छाएँ तज तप से सज कर, बने शांतिप्रभु त्रय पद धर कर।
तप धारें हम बल से स्वामी, अतः शांतिप्रभु को प्रणमामि॥ 8॥

ॐ ह्रीं शक्तितस्तपभावनाभूषिततीर्थंकर पदलाभाय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

संतों के उपसर्ग टाल कर, बने शांतिप्रभु त्रय पद धर कर।
साधु समाधि पाएँ हम स्वामी, अतः शांतिप्रभु को प्रणमामि॥ 9॥

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनाभूषिततीर्थंकर पदलाभाय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

रोगी संतों की सेवा कर, बने शांतिप्रभु त्रय पद धर कर।
वैय्यावृत्य करें हम स्वामी, अतः शांतिप्रभु को प्रणमामि॥ 10॥

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्यकरणभावनाभूषिततीर्थंकर पदलाभाय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।

अर्हत् भक्ति विनय से कर कर, बने शांतिप्रभु त्रय पद धर कर।
अर्हत् भक्ति करें हम स्वामी, अतः शांतिप्रभु को प्रणमामि॥ 11॥

ॐ ह्रीं अर्हत्भक्तिभावनाभूषिततीर्थंकर पदलाभाय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

गुरु आचार्य भक्ति को कर कर, बने शांतिप्रभु त्रय पद धर कर।
आचार्यभक्ति करें हम स्वामी, अतः शांतिप्रभु को प्रणमामि॥ 12॥

ॐ ह्रीं आचार्यभक्तिभावनाभूषिततीर्थंकर पदलाभाय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

उपाध्याय गुरु-भक्ति विनय कर, बने शांतिप्रभु त्रय पद धर कर।
बहुश्रुतभक्ति करें हम स्वामी,अतः शांतिप्रभु को प्रणमामि॥ 13॥

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावनाभूषिततीर्थंकर पदलाभाय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

धर्म प्रकाशक शास्त्र समझ कर, बने शांतिप्रभु त्रय पद धर कर।
प्रवचनभक्ति करें हम स्वामी, अतः शांतिप्रभु को प्रणमामि॥ 14॥

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तिभावनाभूषिततीर्थंकर पदलाभाय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।

यथाकाल छह आवश्यक कर, बने शांतिप्रभु त्रय पद धर कर।
आवश्यक धारें हम स्वामी, अतः शांतिप्रभु को प्रणमामि॥ 15॥

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणिभावनाभूषिततीर्थंकर पदलाभाय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

प्रभावना जिनशासन की कर, बने शांतिप्रभु त्रय पद धर कर।
प्रभावना मय हों हम स्वामी, अतः शांतिप्रभु को प्रणमामि॥ 16॥

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना-भावना-भूषिततीर्थंकर पदलाभाय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.।

धर्मी से गौ वत्स प्रीति कर, बने शांतिप्रभु त्रय पद धर कर।
प्रवचन-प्रेम करें हम स्वामी, अतः शांतिप्रभु को प्रणमामि॥ 17॥

ॐ ह्रीं प्रवचनवत्सलत्वभावनाभूषिततीर्थंकर पदलाभाय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

आत्मा की सेंतालीस (47) शक्तियाँ
(जोगीरासा)

जिससे जीव रहेगा था है, कोई मार न पाये।
आत्मशक्ति जीवत्व उसे ही, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
जन्म मरण का भय दुख हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 18॥

ॐ ह्रीं अल्पमृत्यु अयोग्य मरण भय वेदनाशान्त्यर्थं अविनाशी आत्मशक्तिप्राप्त्यर्थं-श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जिससे आतम जड़-पुद्गल में, कभी बदल ना पाये।
आत्मशक्ति चिति शक्ति उसे ही, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
कष्ट चार गतियों के हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 19॥

ॐ ह्रीं चतुर्गति भयवेदना शान्त्यर्थं दीक्षायोग्यपर्याय आत्मशक्तिप्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अनाकार सामान्य ज्ञेय की, सत्ता जो झलकाये।
आत्मशक्ति दृशिशक्ति उसे ही, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
निज-परकृत संक्लेश हरण को, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 20॥

ॐ ह्रीं शासन प्रशासन सत्तावेदनाशान्त्यर्थं आत्मसत्ता आत्मशक्तिप्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो विशेष साकार ज्ञान गुण, ज्ञेय वस्तु बतलाये।
आत्मशक्ति उस ज्ञान शक्ति को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
मिथ्या प्रचार ज्ञान का हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 21॥

ॐ ह्रीं परनिन्दाज्ञान दुरुपयोग वेदनाशान्त्यर्थं निर्विकल्पज्ञान आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं-श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

रहा अनाकुल लक्षण जिसका, आत्मिक सुख उपजाये।
आत्मशक्ति सुख शक्ति उसे ही, शांतिप्रभु प्रकटाये॥

जीवों के दुख दर्द हरण को, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 22॥

ॐ ह्रीं विश्व वैरदु:ख वेदना शान्त्यर्थं विश्वकल्याण आत्मशक्तिप्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अपने स्वरूप की रचना में, ज्ञान दर्श सुख लाये।
आत्मशक्ति उस वीर्य शक्ति को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
वज्र समान धैर्य साध्य को, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 23॥

ॐ ह्रीं शक्तिदुष्प्रभाव शान्त्यर्थं मुक्तियोग्य वज्रवृषभनाराचसंहनन आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं-श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो अखण्ड प्रताप स्वतंत्रता, दे महिमा बढ़वाये।
आत्मशक्ति प्रभुत्व शक्ति वह, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
दीन हीन वैधव्य हरण को, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 24॥

ॐ ह्रीं दीन हीन दारिद्रय वैधव्य वेदनाशान्त्यर्थं अखण्ड सौभाग्य आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

एक रूप पर सर्व भाव में, जो व्यापक दिख जाये।
आत्मशक्ति उस विभुत्व शक्ति को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
पारिवारिक विघटन हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 25॥

ॐ ह्रीं पारिवारिक विघटन वेदनाशान्त्यर्थं अखण्डपरिवार आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं-श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सकल विश्व सामान्य रूप जो, निज परणति दर्शाये।
सर्व दर्शित्व उस आत्मशक्ति को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
पारिवारिक वैर हरण को, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 26॥

ॐ ह्रीं पारिवारिक वैर वेदनाशान्त्यर्थं विश्वमैत्री आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

लोकालोक विशेष रूप जो, निज परणति बतलाये।
वो सर्वज्ञत्व शक्ति उसी को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
बुद्धि मंदता के दुख हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 27॥

ॐ ह्रीं बुद्धि मंदता वेदनाशान्त्यर्थं सर्वज्ञत्व आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

रूप अमूर्तिक होकर सब जग, दर्पण सम झलकाये।
वही स्वच्छत्व शक्ति उसी को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
आत्ममैल काला-मुख हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 28॥

ॐ ह्रीं आत्ममैल मुख मैलवेदना शान्त्यर्थं स्वच्छत्वरूप आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

स्वयं प्रकाशित विशद विमल जो, स्वानुभव करवाये।
वही प्रकाश शक्ति उसी को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
दुष्ट परिग्रह-ग्रह दुख हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 29॥

ॐ ह्रीं परिग्रह ग्रह वेदनाशान्त्यर्थं आत्मज्योति आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

फैले सिकुड़े आत्म-देश पर, चित्-विलास सब पाये।
असंकुचित विकास शक्ति को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
शत्रु विरोधी प्रभाव हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 30॥

ॐ ह्रीं शत्रु विरोधी दुष्प्रभावशान्त्यर्थं निज व्यापारवृद्धि आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

आतम को कोई न बनाता, आतम कुछ न बनाये।
उस अकार्य कारणत्व शक्ति को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
लक्ष्य विरोधी प्रभाव हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 31॥

ॐ ह्रीं लक्ष्य विरोधीदुष्प्रभावशान्त्यर्थं निजकार्य उन्नति आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

निज-आतम निज-पर को जाने, जाने हमें पराये।
परिणम्य पारिणामकत्व शक्ति को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
सदोष चारित्र प्रभाव हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 32॥

ॐ ह्रीं सदोष चारित्र दुष्प्रभावशान्त्यर्थं निर्दोषव्रताचरण आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो ना कम हो, नहीं अधिक हो, नियतरूप अपनाये।
त्यागोपादान शून्यत्व शक्ति को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
लेन-देन की बाधा हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 33॥

ॐ ह्रीं हीनाधिकता वेदना शान्त्यर्थं त्याग वैराग्य वृद्धि आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

षट्-गुणी वृद्धि हानि रूप जो, सदा प्रतिष्ठा पाये।
अगुरुलघुत्व शक्ति उसी को, शांति प्रभु प्रकटाये॥
मान-प्रतिष्ठा का भय हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 34॥

ॐ ह्रीं मानप्रतिष्ठा वेदना शान्त्यर्थं विशिष्टपद आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

क्रम अक्रम के रूप परिणमन, फिर भी नश ना पाये।
उत्पाद-व्यय-ध्रुवत्व शक्ति को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
पद स्थानान्तरण हरने को, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 35॥

ॐ ह्रीं पदस्थान स्थानान्तरणवेदनाशान्त्यर्थं निजस्थाननिवास आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

विरुद्ध और अविरुद्ध भाव भी, द्रव्यों में रह जायें।
आत्मशक्ति परिणाम शक्ति वो, शांतिप्रभु प्रकटाये॥

बन्धु वर्ग टकरार हरण को, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 36॥

ॐ ह्रीं कुटुम्ब अकुटुम्बकलहवेदनाशान्त्यर्थं वसुधैवकुटुम्बकम् आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कर्मबंध से रहित अमूर्तिक, व्यक्त सहज हो जाये।
वो अमूर्तत्त्व शक्ति उसी को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
जेल शृंखला बंधन हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 37॥

ॐ ह्रीं जेल शृङ्खला बन्धन वेदना शान्त्यर्थं स्वतंत्रसत्ता आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ज्ञान भाव बिन सब कर्मों का, कर्त्ता जो न कहाये।
वो अकर्तृत्व शक्ति उसी को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
तन्त्र-मन्त्र जादू टोना हर, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 38॥

ॐ ह्रीं तन्त्र मन्त्र छल छिद्र दृष्टि मुष्टि परविद्या वेदना शान्त्यर्थं निज विद्या आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ज्ञान-भाव बिन सब कर्मों का, भोक्ता जो न कहाये।
वो भोक्तृत्व शक्ति उसी को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
राग-भोग आदिक विकार हर, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 39॥

ॐ ह्रीं रागभोग वासना शान्त्यर्थं निज आत्मभोग आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कर्म रहित आतम प्रदेश सब, हिल-डुल-चल ना पायें।
वो निष्क्रियत्व शक्ति उसी को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
मन वच तन के विकार हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 40॥

ॐ ह्रीं मन वचन काय विकार वेदना शान्त्यर्थं आत्मसंस्कार आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चरम देह से फैलन सिकुड़न आत्म न्यून शिव पाये।
उस नियत प्रदेशत्व शक्ति को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
हरने दुख निज-वास्तु दोष को, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 41॥

ॐ ह्रीं निज वास्तु दोष वेदना शान्त्यर्थं समवसरण वास्तु आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सब पर्यायों में रह चेतन, उन मय हो ना पाये।
स्वधर्म व्यापकत्व शक्ति वह, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
विभाव धर्म-शक्ति दुख हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 42॥

ॐ ह्रीं परमत विभाव वेदना शान्त्यर्थं निज विद्या आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

समान मिश्र असमान त्रिविध जो, स्व-परधर्म धर पाये।
उस साधारण आदि शक्ति को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
नारि नपुंसक नर दुख हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 43॥

ॐ ह्रीं स्त्री पुरुष नपुंसक वेदनाशान्त्यर्थं ब्रह्मरमण आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

भिन्न लक्षणों के अनन्त गुण, एकमेक रह जायें।
अनन्त धर्मत्व शक्ति उसी को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
जाति भेद की कटुता हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 44॥

ॐ ह्रीं जातिभेद कटुता वेदना शान्त्यर्थं मानवधर्म आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अतद्रूप तद्रूप शत्रुगुण, हिल मिल साथ निभायें।
विरुद्ध धर्मत्व शक्ति उसी को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
आपस के मन-मुटाव हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 45॥

ॐ ह्रीं मनभेदकलुषतावेदनाशान्त्यर्थं भेदविज्ञान आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो जैसा है उस सा होना, उससे डिग ना पाये।
आत्मशक्ति उस तत्त्व शक्ति को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
हरने मत मतान्तरों का दुख, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 46॥

ॐ ह्रीं मत मतान्तर विखराव युद्ध शान्त्यर्थं लक्ष्यसिद्धि आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

निज गुण तज पर सम ना होना, संकर दोष नशाये।
आत्मशक्ति वो अतत्त्व शक्ति को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
बोल-चाल की पीड़ा हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 47॥

ॐ ह्रीं कुशील व्यसन वेदना शान्त्यर्थं यथाख्यात गुण आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

बहु पर्यायी होकर भी जो, एकत्व न तज पाये।
आत्मशक्ति एकत्व शक्ति को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
निज एकल परिवार कष्ट हर, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 48॥

ॐ ह्रीं निजएकल परिवार वेदना शान्त्यर्थं एकत्व विभक्त आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

एक द्रव्य होकर भी आतम, बहु पर्यायें पाये।
आत्मशक्ति अनेकत्व उसी को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
चउ-पुरुषार्थ सिद्धि दुख हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 49॥

ॐ ह्रीं धर्म अर्थ काम मोक्षपुरुषार्थवेदनाशान्त्यर्थं शांतिसिद्धपरिवार आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

वर्तमान की दशा सहित जो, आतम को ठहराये।
आत्मशक्ति उस भाव शक्ति को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥

कैंसर आदिक के दुख हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 50॥

ॐ ह्रीं कैन्सर क्षयरोग हृदयाघात आदिक शान्त्यर्थं आत्मसन्तुष्टि आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

वर्तमान की दशा छोड़कर, अन्य दशा ना भाये।
आत्मशक्ति वो अभाव शक्ति को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
परीक्षा की बेचैनी हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 51॥

ॐ ह्रीं परीक्षाभय वेदना शान्त्यर्थं आत्मसफलता आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो पर्याय आज की कल वह, निश्चित ही नश जाये।
उस ही भावाभाव शक्ति को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
नष्ट वस्तु की चिन्ता हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 52॥

ॐ ह्रीं नष्टवस्तुचिन्ताशान्त्यर्थं लब्धवस्तुसंतुष्टि आत्मशक्तिप्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूर्व न थीं पर अगले पल जो, उदय हुईं पर्यायें।
उसही अभाव भाव शक्ति को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
गाड़ी वाहन दुर्घटना हर, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 53॥

ॐ ह्रीं रेलयान वाहनादि दुर्घटना शान्त्यर्थं रत्नत्रयान आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो होने लायक पर्यायें, होने को हो जायें।
आत्मशक्ति उस भावाभाव को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
जिन गुरु आज्ञा पालन करने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 54॥

ॐ ह्रीं आज्ञा उल्लंघन वेदना शान्त्यर्थं निजगुरु आज्ञापालन आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

होने योग न जो पर्यायें, कभी न होने पायें।
अभाव-अभाव शक्ति उसी को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
गुरु सान्निध्य सदा ही पाने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 55॥

ॐ ह्रीं आश्रय अभाव वेदना शान्त्यर्थं गुरुसान्निध्य आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

हर कारक की क्रिया रहित जो, भवन मात्र रह जाये।
आत्मशक्ति उस भाव शक्ति को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
गुरु वियोग वेदना हरने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 56॥

ॐ ह्रीं गुरु वियोग वेदना शान्त्यर्थं गुरुकृपा आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

षट्कारक अनुसार क्रिया जो, भावमयी करवाये।
आत्मशक्ति उस क्रिया शक्ति को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
गुरु चरणों में समाधि करने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 57॥

ॐ ह्रीं समाधि अभाववेदनाशान्त्यर्थं गुरुचरणसमाधि आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पाने योग्य सिद्धरूपी जो, निर्मल भाव दिलाये।
आत्मशक्ति उस कर्म शक्ति को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
सद् आज्ञाकारी सुत बनने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 58॥

ॐ ह्रीं संतान अभाव वेदनाशान्त्यर्थं गुरुप्रियशिष्य आत्मशक्तिप्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

होने रूप सिद्ध भावों को, करना जो सिखलाये।
वो कर्त्तृत्व शक्ति उसको भी, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
मुक्तिवधू से विवाह करने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 59॥

ॐ ह्रीं कुविवाह बालविवाह अविवाह वेदनाशान्त्यर्थं निजआत्मवधू आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

होने वाले भावों में जो, साधकतम बन जाये।
आत्मशक्ति उस करण शक्ति को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
कल्पवृक्ष मणि कामधेनु सम, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 60॥

ॐ ह्रीं वांछितफल अभाव वेदनाशान्त्यर्थं कामितवस्तु आत्मशक्तिप्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

भाव स्वयं के हुए स्वयं को, पर क्या दे क्या पाये।
वो सम्प्रदान शक्ति उसी को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
दीक्षा-विद्या, गुरु से पाने, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 61॥

ॐ ह्रीं अयोग्यकुलवेदनाशान्त्यर्थं गुरुसाक्षीपूर्वकरत्नत्रयधारणयोग्यकुल आत्मशक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जिससे व्यय उत्पाद हुए पर, कभी न नशने पाये।
वो अपादान शक्ति उसी को, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
पाण्डुकशिला पर न्हवन प्राप्ति को,आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 62॥

ॐ ह्रीं स्नानवेदना शान्त्यर्थं पाण्डुकशिलास्नान आत्मशक्तिप्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

होने योग्य आत्म भावों को, जो आधार दिलाये।
वो अधिकरण शक्ति उसको, शांतिप्रभु प्रकटाये॥
मात-पिता गुरु की सेवा को, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 63॥

ॐ ह्रीं मातृ पितृ गुरु वेदनाशान्त्यर्थं जिनवाणीमाँसेवा आत्मशक्तिप्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अपना स्वभाव बस अपना जो, चिदानन्द दिलवाये।
वो सम्बन्ध शक्ति उसको ही, शांतिप्रभु प्रकटाये॥

इष्ट वियोग अनिष्ट योग हर, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥ 64॥

ॐ ह्रीं इष्ट वियोग अनिष्टसंयोगरूपपरसम्बन्धवेदनाशान्त्यर्थं निर्विकल्पसमाधि आत्मशक्तिप्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्यं

पूज्य ऋद्धियाँ चौंसठ जिनके, तीर्थंकर जिन स्वामी।
जिनके नाम मात्र सुमरण से, मिले राह कल्याणी॥
विघ्न उपद्रव कष्ट हरें जो, इच्छित फल वरदानी।
आत्मशक्ति जो जाग्रत करके, करती स्वयं समानी॥

शांतिप्रभु की भक्ति जाप से, आत्मशक्तियाँ जागें।
यहाँ-वहाँ फिर भटक-भटक क्यों, सम्यग्दर्शन त्यागें॥
शांतिप्रभु सम आत्मशांति को, आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं विश्ववेदनाशान्त्यर्थं आत्मशांति आत्मशक्तिप्राप्त्यर्थं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

सम्पूर्णार्घ्यं

पूर्ण एक सौ बीस अर्घ ले, शांतिप्रभु हम पूजें।
विश्वशांति अध्यात्म प्राप्ति को, शांति प्रभु ना दूजे॥
निज सम निज को बनने हे जिन! आत्मशक्ति दो स्वामी।
शांतिप्रभु के पद-कमलों में, बारम्बार नमामि॥

ॐ ह्रीं शतैकविंशतिकोष्ठस्थापिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय सम्पूर्णार्घ्यं.....।

चार तरह की हैं शरण, शांतिप्रभु के नाम।
विश्वशांति की शांति को, बारम्बार प्रणाम॥

(पुष्पांजलिं...)

जाप्यमन्त्र

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं विश्वशांतिकराय श्रीशांतिनाथाय नमः
सर्वविघ्नोपद्रवशांतिं कुरु-कुरु स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

अद्वितीय जिनराज हैं, शांतिनाथ भगवान्।
जिनके सुमरण से मिले, परमशांति निर्वाण॥
चक्रवर्ति पंचम रहे, बारहवें कामदेव।
तीर्थंकर सोलम जिन्हें, शीश झुके स्वयमेव॥

(सायक)

हम माथा जिनको टेक चले, वह प्यारे प्रभु शान्तीश मिले।
बस आशा अपनी एक रही, हमको भी प्रभु आशीष मिले॥
हर तीर्थंकर से भिन्न रहे, निज को पा निज में लीन रहे।
जय शांति-प्रभु हे शांतिप्रभु! अपने तो निज-आदर्श रहे॥ 1॥

भव-सागर तिरने यान रहे, निज मुक्ति वर श्रद्धान रहे।
चित्-ध्यानी बनने ध्यान रहे, निज-ज्ञानी बनने ज्ञान रहे॥
अघ हिंसा हरने दूत रहे, फिर भी जो निज चिद्रूप रहे।
जय शांति-प्रभु हे शांतिप्रभु! हम धर्मीजन की शान रहे॥ 2॥

जय पापों पर भी आप करें क्षय वैभाविक भी आप करें।
हर विघ्नों दुख को आप हरें, चरणों में हम भी माथ धरें॥
गुण सोला धर, तीर्थंकर का, पद पाया जिन सम्राट अहो।
जय शांतिप्रभु हे! शांतिप्रभु, अपनी भी कुछ तो बात रखो॥ 3॥

प्रकटायी निज की शक्ति सभी, प्रकटायी निज की मुक्ति जभी।
प्रकटायें हम भी शक्ति सभी, रच पायी जिन की भक्ति तभी॥
अब स्वामी कर दो आप कृपा, हममें भी निज की शक्ति भरो।
जय शांतिप्रभु हे! शांतिप्रभु, हमको भी निजवत् शुद्ध करो॥ 4॥

यह विश्वास हमें भी कुछ दो, नित हो साथ हमारे तुम भी।
यदि विश्वास यही हो प्रभु तो, सह लें कष्ट हँसी से हम भी॥
जय को प्राप्त किए हो तुम ज्यों, जय को प्राप्त करें यों हम भी।
झट ही 'सुव्रत' को शांति मिले, निज 'विद्या' पद को पायें हम भी॥ 5॥

(सोरठा)

यह अनन्त संसार, यहाँ कहाँ पाओ शरण?
अतः शांतिप्रभु द्वार, खोजें पूजें हम चरण॥
यही लगा के आश, आत्मशांति हो विश्व में।
बनके प्रभु के दास, पायें मोक्ष भविष्य में॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं.....।

(दोहा)

शांतिनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, शांतिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

॥ इति श्री शांतिनाथविधान सम्पूर्णम्॥

प्रशस्ति

सिद्ध क्षेत्र अतिशय जहाँ, मूल पार्श्व भगवान्।
पूर्ण 'पवाजी' में हुआ, शांतिनाथ विधान॥
पन्द्रह सोलह जनवरी, आये पार्श्व नवीन।
चौबीसी त्रैयकाल में, हुए उच्च आसीन॥
दो हजार चौदह रहा, बुध गुरु दिन तारीख।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

(लय : विद्यासागर की गुण.....)

शांतीश्वर की, परमेश्वर की, शुभ मंगल दीप सजाय हो,
हम आज उतारें आरतिया॥
विश्वसेन ऐरादेवी के गर्भ विषें प्रभु आये।
हस्तिनागपुर जन्म लिया था, सब जन मंगल गाये,
प्रभुजी, सब जन मंगल गाये।
तीर्थंकर की, क्षेमंकर की, शुभ मंगल दीप प्रजाल हो,
हम आज उतारें आरतिया॥ 1॥
तीन-तीन पदवी के धारी, लोकालोक निहारी।
धर्मधार को पुनः बहाकर, सुखी किये संसारी,
प्रभुजी, सुखी किये संसारी।
जगस्वामी की, शिवधामी की, हो बार-बार गुण गायके,
हम आज उतारें आरतिया॥ 2॥
दर्शन करके अतिशय सुनके, जीवन सफल बनायें।
भक्तिभाव से आरती करके, पुण्य शांति हम पायें,
प्रभुजी, पुण्य शांति हम पायें।
शुभकारी की, अघहारी की, धर 'सुव्रत' शीश झुकाय के,
हम आज उतारें आरतिया॥ 3॥
शांतिश्वर की .....॥